श्री नमस्कार महामंत्र

नमो अरिहंताणं
नमो सिद्धाणं
नमो आयरियाणं
नमो उवज्झायाणं
नमो लोऐ सव्वसाहुणं
अेसो पंच नमुक्कारो
सव्व पावपणासणो
मंगलाणं च सव्वेसिं
पढमं हवइ मंगलं

पंचिदिय सूत्र (स्थापनाचार्यजी)

पंचिदिय संवरणो, तह नवविह बंभचेर गुत्तिधरो
चउविह कसाय मुक्को, इअ अट्ठारस गुणेहिं संजुत्तो,
पंच महव्वय जुत्तो, पंच विहायार पालण समत्थो,
पंच समिओ तिगुत्तो, छत्तीस गुणो गुरु मज्झ.

संकलन : प्रदिपभाई शाह – मनीषसर

प्रभु समक्ष बोलवानी भाववाही स्तुतिओ...

सागर दयाना छो तमे, करुणातणा भंडार छो,
अम पतितोने तारनारा, विश्वना आधार छो,
तारा भरोसे जीवन नैया, आज में तरती मूकी,
कोटि कोटि वंदन करुं! जिनराज! तुज चरणे झूकी... 1.
गिरुआ गुणो तुज केटला, गुण सागरो ओछा पडे
रुप लावण्य तारुं केटलुं, रुप सागरो पाछा पडे,
सामर्थ्य अेवुं अजोड छे, सहु सक्तिओ झांखी पडे,
तारा गुणानुवादमां मां शारदा पाछा पडे... 2.
कुंजरसमा शूरवीर जे छे, सिंहसम निर्भय वली,
गंभीरता सागर समी, जेनां हृदयने छे वली,
जेना स्वभावे सौम्यता छे, पूर्णिमा ना चंद्रनी,
अेवा प्रभु अरिहंतने, पंचांग भारे हुं नमुं... 3.
क्यारे प्रभु ! निज द्वार ऊभो, बालने निहालशो ?
नित नित मांगे भीख गुणनी, अेक गुण क्यारे आपशो,
श्रद्धा दिपकनी ज्योत झांखी, ज्वलंत क्यारे बनावशो ?
सूना सूना अम जीवनगृहमां आप क्यारे पधारशो ! 4.
क्यारे प्रभु ! तुज स्मरणथी, आंखो थकी अश्रु सरे ?
क्यारे प्रभु ! तुज नाम वदता, वाणी मुज गद्‌गद् बने ?
क्यारे प्रभु ! तुज नाम श्रवणे, देह रोमांचित बने ?
क्यारे प्रभु ! तुज श्वास श्वासे, नाम तारुं सांभरे ? 5.

प्रभु समक्ष बोलवानी भाववाही स्तुतिओ...

जिम छोड शोभे फूलथी ने फूल शोभे रंगथी !
शोभे सरोवर कमलथी ने कमल शोभे हंसथी !
जिम रात शोभे चांदथी ने चांदनी थी चंद्रमां !
तिम आपश्रीथी हे प्रभु ! शोभी रह्युं छे विश्व आ ! 6.

संतप्त आ संसारमां, करुणानी जलधारा तमे,
चंदा तमे, सूरज तमे, तप तेजधर तारा तमे,
सहु जीवथी न्यारा तमे, सहु जीवना प्यारा तमे,
हे नाथ ! हैयुं दई दीधुं, हवे आजथी मारा तमे. 7.

मुज पुन्यनी पुष्ठि तमे, संकल्पनी मुष्ठि तमे,
भवगीष्म तापे तप्त जीवो, पर अमी द्रष्टि तमे,
आ विश्वनी हस्ती तमे, मुज मन तणी मस्ती तमे,
मुज नेत्रनी द्रष्टि तमे, मुज स्वप्ननी सृष्टि तमे. 8.

थाक्या हता ने रथ मल्यो, तरस्या हता ने नदी मली,
तडके तप्या ने तरु मल्या, रोगी हता औषधि मली,
रस्तो भूल्या ता प्रभु अमेने मार्गदर्शक सांपडयो !
अंधकारमां दीवडो मल्यो, भवमां भटकता तुं मल्यो ! 9.

शत कोटि कोटि वार वंदन... नाथ ! मारा हे तने,
हे प्रभु पार्श्वनाथ तुं..... स्वीकार मारा नमनने,
हे नाथ ! शुं जादुं भर्या..... अरिहंत अक्षर चारमां,
आफत बधी आशिष बने..... तुज नाम लेता वारमां... 10.

प्रभु समक्ष बोलवानी भाववाही स्तुतिओ...

रुप तारुं अेवुं अद्‌भुत, पलक विण जोया करुं,
नेत्र तारा निरखी निरखी, पाप मुज धोया करुं,
हृदयना शुभ भाव परखी, भावना भावित बनुं,
झंखना अेवी मने के, हुं ज तुज रुपे बनुं. 11.
जेओ युगादिकालमां, पहेला ज राजेश्वर हता,
जेओ युगादिकालमां, पहेला ज संयमधर हता,
जेओ युगादिकालमां, पहेला ज तीर्थंकर हता,
ते आदिनाथ जिनेन्द्रने, पंचांग भावे हुं नमु !... 12.
तने रामनुं कोई नाम दे, हनुमान तारो हुं बनुं,
तने ऋषभ जो कोई कहे, श्रेयांस तारो हुं बनुं,
अनंतरुपे भजु तने, हैये छतां एक झंखना,
क्यारे तुं मारी मां बने, बाल तारो हुं बनुं... 13.
वैराग्यना रंगो सजी, क्यारे प्रभु संयम ग्रहु,
सदगुरुना चरणे रही, स्वाध्यायनुं गुंजन करुं,
भविजीवने दई देशना, हुं धर्मनुं सिंचन करुं,
कर्मो थकी अलगा बनी, निर्लेप थई मुक्ति वरुं. 14.
सम्मेतशिखरे स्तंभ तीर्थे, थिरपुरे भिलडीपुरे,
नागेश्वरे कलिकुंडमां, विजापुरे पाटणपुरे,
शंखेश्वरे जे शोभता, आवी वस्या मारा उरे,
मारा प्रभु श्री पार्श्वने, पंचांग भावे हुं नमुं. 15.

प्रभु समक्ष बोलवानी भाववाही स्तुतिओ...

जे राजराजेश्वतणी अद्भूत छटाये राजता,
शाश्वतगिरिना उच्चशिखरे, नाथ जगना शोभता,
जेओ प्रचंड प्रतापी जगना, मोहने निवारता,
ते आदि जिनने वंदता... मुज पाप सहु दूरे थता. 16.
षोडश कषायो परिहरीने, सोळमां जिन राजता,
षट्खंडना विजयी बनीने, चक्रीपदने..... पामता,
चउमास रही गिरिराज पर जे, भव्यने उपदेशता,
ते शांतिजिनने वंदता, मुज पाप सहु दूरे थता. 17.
पंथी मांही शोध्यो तने, ग्रंथी मांही शोध्यो तने,
मंत्री मांही शोध्यो तने, शास्त्रोमांही शोध्यो तने,
चारे दिशामां हुं फर्यो पण, क्यांय प्रभु तुं ना मल्यो,
अंते में थाकीने जोयुं तो, मारा हृदयमां तुं मल्यो. 18.
मुख मलकतुं लोचन चमकतां, नूर निखरे बदन पर,
झलके अपार प्रसन्नता, तुज प्रेमभीना वदन पर,
कामण करे छे रुप तारुं नाथ! मारा नयन पर,
प्रभु तुं छवायो नयन पर, मन पर, मनन पर, वचन पर. 19.
मुज शान तुं, सन्मान तुं, आ जीवननो अरमान तुं,
भक्ति भरेला हृदय केरा, भगत तो भगवान तुं,
विलंब ना करजे प्रभु, रखडी रह्यो छुं हुं तुज विना,
निरवाणनी यात्रा महीं, तुज साथनी छे झंखना. 20.

...आदिनाथ दादा मारे, हैये वसोने...

आदिनाथ दादा मारे, हैये वसोने (2)
हैयो वसोने मारे, रोमे वसोने
रोमे वसोने मारे, मनडे वसोने
गिरिराजना आदिनाथ मारा हैये वसोने नाथ
शत्रुंजयना आदिनाथ मारा हैये वसोने नाथ

प्रथम राजेश्वर, प्रथम संयमघर, प्रथम तिर्थंकरने हुं प्रणमुं
नाभिना... नंद मारे हैये वसोने, हैये वसोने मारे...
युगला धर्म निवार्युं जेणे, भेटमां मातने मोक्ष अपाव्युं

मरुदेवाना लाल मारे हैये वसोने, हैये वसोने मारे....
जगतगुरुनो बिरुद घरावे, मुक्तिपुरीनो मारग बतावे,
शत्रुंजयना देव मारे हैये वसोने, हैये वसोने मारे.....

...तारा प्रेममा प्रभुजी हुं भीझावुं छुं...

रोमे रोमे हुं तारो थतो जाऊं छुं,
तारा प्रेममा प्रभुजी हुं भीझावुं छुं.
हवे परवडे नहीं, रहेवानुं ताराथी दूर,
तारे रहेवानुं हृदयमां हजूरा हजूर
तारी नजरोमां नजरातो जाउं छुं,
तारा प्रेममां प्रभुजी हुं भींजाऊं छुं... तारा...1.

हवे जोडुं नही नातो हुं जगमां कोईथी
मने वालो तुं, वालो तुं वालो सहुथी
तारी यादोमां खोवातो जाउं छुं... तारा...2.

हवे शरणुं लीधुं छे तो शत राखजे
तारा बालने, तारा चरणोमां राखजे
वितरागी तारा थकी हुं सोहाउं छुं.... तारा...3.

हे शंखेश्वर स्वामी...

हे शंखेश्वर स्वामी... प्रभु जग अंतर्यामी,
तमने वंदन करीअे... पार्श्वने वंदन करीअे,
मारो निश्चय अेक ज स्वामी ! बनुं तमारो दास (2)
तारा नामे चाले (2)... मारा श्वासो श्वास..... हे शंखे...1.

दुःख संकटने कापो स्वामी!... वांछितने आपो (2)
पाप अमारा हरजो (2) शिवसुखने देजो... हे शंखे...2.

निशदिन हुं मागुं छुं स्वामी ! तुम चरणे रहेवा (2)
ध्यान तमारुं ध्यावुं (2)... स्वीकारजो सेवा.... हे शंखे...3.

रात दिवस झंखु छुं स्वामी ! तमने मलवाने (2)
आतम अनुभव मागुं (2) भवदुःख टलवाने... हे शंखे...4.

करुणाना छो सागर स्वामी ! कृपातणा भंडार (2)
त्रिभुवनना छो नायक (2) जगना तारणहार... हे शंखे...5.

आश भरीने आव्यो स्वामी

आश भरीने आव्यो स्वामी ! भक्तिमां नहि राखुं खामी
पूरजो मारी आश.... ओ शंखेश्वरा
राखजो मारी लाज... ओ शंखेश्वरा

तार हो तार हो प्रभुजी ! हुं तो जेवो छुं तेवो तमारो
कोई नथी अहीं मारुं, प्रभु ! आपी दे मुजने सहारो...
पार करो... उद्धार करो... मुज जीवन नैयाने.... ओ शंखेश्वरा

भान भूली गयो छुं, सन्मति तुं मुजने देजे
राह भूली गयो छुं, मने राह बतावी तुं देजे
माया केरी आ दुनियामां रझडी पड्यो छुं आज... ओ शंखेश्वरा

मारी आंखोमां शंखेश्वर आवजो रे

मारी आंखोमां शंखेश्वर आवजो रे,
हुं तो पांपणना पुष्पे वधावुं
मारा हैयाना हार बनी आवजो रे,
हुं तो पांपणना पुष्पे वधावुं
तमे वामादेवीना जाया, त्रण लोकमां आप छवाया,
मारा मनना मंदिरमां पधारजो रे..... हुं तो.....

भवसागर छे बहु भारी, झोला खाती रे नावडी मारी,
नैयाना सुकानी बनी आवजो रे..... हुं तो.....

मने मोहराजाअे हराव्यो, मने मारग तारो भुलाव्यो
मारा जीवनना सारथी बनी आवजो रे.....हुं तो.....

मारा दिलमां रहया छो आप, मारा मनमां चाले तारो जाप
मारा मनना मयुर बनी आवजो रे..... हुं तो.....

मने रात दिवस हुं याद करु

मने रात दिवस हुं याद करुं, शंखेश्वर पारसनाथ प्रभु !
तने रात दिवस हुं याद करुं, मारा स्वामी सिमंधरनाथ प्रभु !
तारा दरिशननी हुं आश करुं, मारा दिलनी तने शुं वात करुं ?
अंतरयामी जग विसरामी, सहु जीवनो प्रभु ! तुं हित कामी
कलिकालनो छे तुं कल्पतरुं, वितराग प्रभु छे विघ्नहरुं
तने रात.....

मोहे धेर्या लोचन मारा, कीधां नहीं में दरिशन तारा
अेथी दुःख भर्युं जीवन मळीयुं, बहु आप करम मुजने नडीयुं
तने रात.....

ओ दीनबंधु ! करुणासागर ! शरणागतना स्नेह सुधाकर,
स्वामी ! भक्त बनी नमतो तुजने, दुःख मुक्त तुरत करजो अमने
तने रात.....

तुं तारजे डुबाडजे

तुं तारजे डुबाडजे, जीवाडजे के मारजे,
सघलुं तने सोंपी दीधुं, आदीश्वर भगवान रे..... 1.

तुं तारजे के मारजे, तरछोडजे स्वीकारजे
सघलुं तने सोंपी दीधुं, आदीश्वर भागवान रे..... 2.

सेवा तारी आपजे के दूर तुजथी राखजे,
स्मरण तारुं आपजे के मायामां लपटावजे
सघलुं तने सोंपी दीधुं, आदीश्वर भागवान रे..... 3.

सत्संग कोइने आपजे के, दुसंगमां तुं राखजे,
दर्शन तारा आपजे के रखडतो तुं राखजे,
सघलुं तने सोंपी दीधुं, आदीश्वर भगवान रे..... 4.

सघलुं तारुं राखजे पण वात मारी मानजे,
सद्गुरुना चरणोमां, आ बालने स्थान आपजे,
सघलुं तने सोंपी दीधुं, आदीश्वर भागवान रे..... 5.

गाजे रे गाजे

गाजे रे गाजे, गाजे रे गाजे (2)
आ दुषमकालनी कालरात्रिमां जय जयकार मचावे,
महावीरनुं शासन गाजे, मारा वीरनुं शासन गाजे, गाजे रे
गाजे...1.

पावनकारी तीर्थभूमिओ, जिन बिंबोने जिनालयो (2)
सोहे जगमां पुण्यभूमिओ (2) जिनागमो वली उपाश्रयो (2)
दुषम...2.

जिनशासननी रक्षा करतां, आचार्यो संघ घोरी छे (2)
मुनिगण माता प्रवचन त्राता (2) उपाध्याय उपकारी छे (2)
दुषम...3.

ज्ञान ध्यानमां मस्त मुनिओ, मोहरणे टंकार करे (2)
विरती संगी शासन रंगी (2) जिनभक्तो जयकार करे (2)
दुषम...4.

विरती धरनो वेश प्योरो प्यारो लागे रे

विरती धरनो वेश प्योरो प्यारो लागे रे,
संसारीनो संग, खारो खारो लागे रे.....
भवसागर छे भारी, मुजने तरता ना फावे (2)
तरवानी घणी होंश मुजने कोण हवे उगारे (2)
संयमनो आ पंथ..... तारणहारो लागे रे
संसारीनो संग खारो खारो लागे रे..... विरतीधर

साचा सुखने शोंधुं छुं मने मारग कोण देखाडे (2)
आंगडी मारी पकडी मुजने, मुक्ति पंथ बतारे (2)
सद्गुरुनो संग..... अेक ज साचो लागे रे.....
संसारीनो संग खारो खारो लागे रे..... विरतीधर

रजोहरण मेलववाने हवे मन मारुं लोभायुं (2)
गुरुकुलमां वसवाने काजे, दिल मारुं ललचायुं (2)
महावीर तारो मारग..... कामणगारो लागे रे,
संसारीनो संघ खारो खारो लागे रे..... विरतीधर

उंचा उंचा शत्रुंजयना शिखरो सोहाय...

उंचा उंचा शत्रुंजयना शिखरो सोहाय...
वच्चे मारा (2) दादा केरा देरा झगमग थाय... उंचा..1.
दादा तारी यात्रा करवा, मारु मन ललचाय (2)
तलेटीअे शीश नमावी, चढवा लागुं पाय (2)
पावनगिरिनो (2) स्पर्श थाता, पापो दूर पलाय... उंचा..2
लीली लीली झाडीओमां, पंखी करे कलशोर (2)
सोपान चढता चढता जाणे, हैयुं अषाढी मोर (2)
कांकरे... कांकरे (2) सिद्धा अनंता लळी लळी लागु पाय... 3.
पहेली आवे रामपोलने, त्रीजी वाघण पोल (2)
शांतिनाथना दर्शन करता, पहोंच्या हाथीपोल (2)
सामे मारा (2) दादा केरा दरबार देखाय ..... उंचा..4.
दोडी दोडी आवु दादा तारा, दर्शन करवा आज (2)
भाव भरेली भक्ति करीने, सारो आतम काज (2)
मरु देवाना (2) नंदन निरखी, जीवन पावन थाय... उंचा..5.
क्षमाभावे ओमकार पदनो, नित्य करीश हुं जाप (2)
दादा तारा गुणला गाता, कापीश भवना पाप (2)
पद्मविजयने (2) हैये आजे, आनंद अति उभराय... उंचा..6.

सिद्धगिरिने भेटवानो भाव जाग्यो रे

(राग : विरतिधरनो वेश.....)

सिद्धगिरिने भेटवानो भाव जाग्यो रे
गिरिवरनी भक्तिमां मारो मनडो लाग्यो रे ! गिरि. 1.
भवसागर ने तरवा माटे गिरिवर नैया छे,
उज्ज्वलगिरिने भेटता, बस हर्षित हैया छे,
मेरु महिधर तीर्थने मै आराध्यो रे... गिरि. 2.
सिद्धाचल विमलाचल रैवत गिरिवर नाम छे
भद्रंकर गुणकंद चरणमां नित्य प्रणाम छे,
महोदयगिरि महापीठगिरि शाश्वत भाख्यो रे... गिरि. 3.
ज्योति स्वरुप शिवपद उदयगिरि कीर्ति भारी छे,
कर्मसुदन सुरप्रिय गिरिवर जय जयकारी छे,
नंदिवर्धन तालध्वजगिरि, दिलमां राख्यो रे... गिरि. 4.
अजरामर पद चर्चगिरिवर शिवदा संतो छे,
नगेश हेमगिरि जयंतगिरि जय जय वंतो छे,
कपर्दिवास अनंत शक्ति ग्रंथे दाख्यो रे... गिरि. 5.

चिंतामणी मारी चिंता चूर

आणी शुद्ध मन आसता, देव जुहारु शाश्वता,
पारसनाथ मनवांछित पूर चिंतामणी मारी चिंता चूर
शंखेश्वरदादा मारी चिंता चूर, नागेश्वरदादा मारी चिंता चूर... 1.
अणियाली तारी आंखडी, जाणे कमलनी पांखडी,
मुख दीठे दुःख जाये दूर, चिंतामणी मारी चिंता चूर... 2.
लोको कोई कोई ने नमे, मारा मनमां तुज रमे,
सदा जुहारु उगते सूर्य, चिंतामणी मारी चिंता चूर... 3.
शंखेश्वरना साचा देव, अशुभ कर्मने पाछा ठेल,
तुं छे मारे हजूराहजूर, चिंतामणी मारी चिंता चूर... 4.
आ स्तोत्र जे मनमां घरे, अेना काज सदाय सरे,
आधि व्याधि दुःख जाये दूर, चिंतामणी मारी चिंता चूर... 5.
मुजने लागी तुजशुं प्रीत, दूजो कोई ना आवे चित्त,
कर मुज तेज प्रताप प्रचुर, चिंतामणी मारी चिंता चूर... 6.
भवोभव मांगु तुजपद सेव, चिंतामणी ओ अरिहंत देव,
समयसुंदर कहे गुण भरपुर, चिंतामणी मारी चिंता चूर... 7.

पूजो गिरीराजने रे...

मनना मनोरथ सवि फल्या अे, सिध्या वांछित काज,
अे..... पूजो गिरिराज ने, वंदो आदिनाथने रे,
प्राये अे गिरि शाश्वतो अे, भवजल तरवा जहाज... पूजो...

मणि माणेक मुक्ताफले अे, रजन कनकना फूल,
केशर चंदन घसी घणा अे, बीजा वस्तु अमूल... पूजो...

पुंडरिक गणधर थी थयो अे, पुंडरिक गिरि गुणधाम,
सुरनर कृत अेम जाणीअे रे, उत्तम अेकवीस नाम... पूजो...

अे गिरिवरना गुण घणा अे, नाणीअे नवि कहेवाय,
जाणे पण कही नवी शके अे, मुकगुडने न्याय... पूजो...

गिरिवर फरसन नव कर्यो अे, ते रह्यो गर्भावास,
नमन दर्शन फरसन कर्यो अे, पूरे मननी आश... पूजो...

आनंद रंग.....

आनंद रंग, भगवंत संग, अनहद उमंग उपजायो,
अम अंग (2) सागर तरंग, उछरंग सुमंगल पायो,
गुणगान प्रभुना सुरतालमां, अद्‌भुत अनुपम वाले,
नेमिनाथ मंदिरे मनोहर(2)... गढ गिरनार तीर्थे मनोहर

गुणगान प्रभुना...

आंगी केवी झाझरमान, शोभे जाणे देव विमान,
दीवे... दीवे सोनेरी, ज्योति करती नंदन गान,
आ पुन्य अमारा जाग्या केवा, भाग्य फल्या छे अेवा,
जे शक्ति मली छे अेना योगे, करीअे उत्तम सेवा,

गुणगान प्रभुना...

सुखकारण दुःखवारण छे, जिनराया भवतारण छे,
भवतारण अधमारण छे, नेमिनाथ गुणधारण छे,
जे भक्ति करी ते ओछी लागे, जागे नित नित प्रीति,
अम अंतर आ हंमेशा गातु, परम प्रभुनी प्रीति,

गुणगान प्रभुना...

जिनवर तारुं शासन.....

जिनवर तारुं शासन आ जगमां छे महान
अेना आधारे मारे, तरवो आ संसार
मने अेज तारशे, भव पार उतारशे,
मझधारमां नैया, कांठे पहोचाडशे,
अेवी मुजने श्रध्दा छे, साचे साची श्रद्धा छे,
द्दढ़ मुजने श्रद्धा छे, पाके पाये श्रद्धा छे, जिनवर... 1.
नश्वर संबंधो ज्यारे साथ छोडशे,
त्यारे निश्चय अे मारो हाथ पकडशे,
समजण देशे, सांत्वना देशे, शक्ति पण देशे,
भूलो जो पडीश, मुजने मारग अे देखाडशे,
ढीलो जो पडीश, मारुं सत्व अे वधारशे.. जिनवर... 2.
मुंझवण हशे तो मार्गदर्शन आपशे,
अवढळमां साची मने समजण आपशे,
मोक्षमार्गनुं अेकांते आकर्षण आपशे,
पुरुषार्थ करशे अेने आधार आपशे,
समर्पित थयेलानुं ध्यान सदा राखशे... जिनवर... 3.

जय... जय... जय... गरवो गिरनार...

जय जय गरवो गिरनार, जय जय गरवो गिरनार
नेमिनाथ गिरि शणगार, जय जय गरवो गिरनार
वंदन... वंदन... वंदन... गिरनार तने वंदन... (2) 1.
पंचम शिखर शत्रुंजय तणुं, अे सिद्धगिरि छे धाम,
कैलास उज्जियंत रैवत नग भद्र, सुवर्णगिरि गिरनार,
नमो कर्ण विहार प्रासाद, जय जय गरवो गिरनार (2) 2.
ज्यां शोभे अंबिका माँ, शासनने सदा सुखकार,
भवि प्रणमो श्री नेमि जिनेश्वर, गिरिभूषण शणगार,
पृथ्वीनां तिलक समा, जय जय गरवो गिरनार (2) 3
छे असंख्य आत्माओ तणी दीक्षाभूमि गिरनार,
छे अनंत तीर्थंकरो तणी कैवल्यभूमि गिरनार,
ने आवती चौविशीतणी निर्वाणभूमि गिरनार,
अध्यात्मनगरी गिरनार, जय जय गरवो गिरनार (2) 4.
चौद हजार नदीनां ज्यां जल समाया, शीतल गजपद कुंड,
ज्यां द्रष्टि अनुपम धन्यता, जोई राजुल रहनेमि टूंक,
दीक्षा केवल सहसावने नमो समवसरण जिन बिंब,
दीपे शिखरोनी माल, जय जय गरवो गिरनार (2) 5.

हे जीव जरा सांभल.....

हे जीव जरा सांभल, तुं शुं करी रह्यो छे !
छे क्यां जवानुं तारे, ने क्यां जई रह्यो छे...
उत्तम तने जे मान्यां, भव साधना ज करवा,
अेने गुमावे छे तुं, साधनोने मेलववा,
रत्नोने फेंकीने तुं, पथ्थर विणी रह्यो छे !... छे क्यां

जेने तुं माने तारो, आ भवनो छे अे साथी,
शाने करे छे तुं राग, शाने करे छे मैत्री,
आत्माने भूलीने तुं, काया चूंथी रह्यो छे... छे क्यां

शैशव वीती गयुं छे, यौवन रह्युं छे वीती,
आवी रह्युं छे घडपण, मृत्युं रह्युं ताडी,
समयने तुं गुमावी, धनने लूंटी रह्यो छे... छे क्यां

उंचा अंबरथी आवोने प्रभुजी

उंचा अंबरथी आवोने प्रभुजी (2) दर्शन करवाने तलसे आंखडी
रुम झुम (2) आवोने प्रभुजी, राह जोई छे प्रभु में आपनी
सूरज ने चांदलाना में दिवडा प्रगटाव्या,
टमटमता तारला ने रस्ते बिछाव्या,
थयो रे अधिर हुं तो जोउं तारी वाटडी... दर्शन...

आवो तो नयनोमांथी, अमीरस वरसावजो,
कापोने कर्मो अमारा, भक्ति स्वीकारजो,
मुखलडुं जोवा हुं तो निरखुं छुं वाटडी... दर्शन...

लाख लाख दिवडाथी देरासर सजाव्युं,
हृदय सिंहासनमां... आसन बिछाव्युं,
मारा अंतरमां पधारो प्रभुजी... दर्शन...

मने व्हालुं लागे...

मने व्हालुं लागे, मने व्हालुं लागे,
मने व्हालुं लागे, दादा तारुं नाम
तन, मन, धन प्रभुना चरणोमां..... 1.
नाम तमारुं लेता दादा, भवसागर तरी जईअे,
स्मरण तमारुं करता दादा, मुक्तिना डग भरीअे,
तने जोया करुं (3) दिवस ने रात...
तन, मन, धन प्रभुना चरणोमां..... 2.
सुरवर मुनिवर सौ कोई समरे नाम तमारुं हैये
तारा नामे पापी जीवो, पण पावन थई जाये,
मारा हैये वसे (3) दादा तारुं नाम.....
तन, मन, धन प्रभुना चरणोमां..... 3.
प्रभुजी अमारा हैयामां रहेजो, आवीने मारो हाथ पकडजो
जीवनना आधार छो, जीवनना शणगार छो,
तमे मारा चितडाना चोर.....
तन, मन, धन प्रभुना चरणोमां..... 4.
तारा गुणोनो पार न आवे, पार न आवे गणता पार ना आवे
देवोना पण देव छो, त्रण भुवनना नाथ छो,
तमे मारा हृदयना प्राण .....
तन, मन, धन प्रभुना चरणोमां..... 5.

प्रभु राखजे उघाडा.....

प्रभु राखजे उघाडा द्वार, तारा बालकडाने काजे,
कोई प्रभु प्रभु करतो आवे, कोई पार्श्वनी धुन मचावे,
करुणा करजे किरतार, तारा बालकडाने काजे,
प्रभु राखजे..... 1.

कोई भावे पुष्पे पूजे, कोई प्रेम दिपक प्रगटावे,
रक्षा करजे तारणहार, तारा बालकडाने काजे,
प्रभु राखजे..... 2.

कोई टलवलता दुःख माटे, कोई रोता हैया फाटे,
तुमथी केम जोई शकाय, तारा बालकडाने काजे,
प्रभु राखजे..... 3.

प्रभु पारसनाथ अमारा, अमने प्राण थकी छो प्यारा,
मोक्ष मारगना देनारा, तारा बालकडाने काजे,
प्रभु राखजे..... 4.

भगवान मेरी नैया.....

भगवान मेरी नैया उस पार लगा देना,
अब तक तो निभाया है आगे भी नीभा लेना
भगवान मेरी नैया..... 1.

संभव है झंझटो मे, में तुझको भुल जाउं
पर नाथ मेरे तुमभी मुजको न भुला देना
भगवान मेरी नैया..... 2.

दलदल के साथ माया, घेरे जो मुजे आकर,
तुम देखते ना रहेना, झट आके बचा लेना
भगवान मेरी नैया..... 3.

तुम देव मे पूजारी, तुम इष्ट के उपासक,
यह बात अगर सच है, तो सोच कर दिखा देना
भगवान मेरी नैया..... 4.

यह है पावन भूमि.....

यह है पावन भूमि, यहां बार बार आना,
प्रभु वीरके चरणोंमें, आकरके झुक जाना...

यह है... 1.

तेरे मस्तक पें मुगट है, तेरे कानों में कुंडल है,
तूं तो करुणा सागर है, मुझ पर करुणा करना...

यह है... 2.

तूं जीवन स्वामी है, तूं अंतयामी है,
मेरी बिनती सुन लेना, भव पार मुझे कर देना...

यह है... 3.

तेरी सावली सूरत है, मेरे मनको बुभाती है,
मेरे प्यारे प्यारे जिनराज, युग–युग में अमर रहेना...

यह है... 4.

तेरा शासन सुंदर है, सभी जीवोका तारक है,
मेरी डूब रही नैया, नैया पार लगा देना...

यह है... 5.

हे करुणाना करनारा.....

हे करुणाना करनारा ! तारी करुणानो कोई पार नथी,
हे संकटना हरनारा ! तारी करुणानो कोई पार नथी,
में पाप कर्या छे अेवा, हुं भूल्यो तारी सेवा,
मारी भूलोना भूलनारा, तारी...
हुं अंतरमां थई राजी, खेल्यो छुं अवली बाजी,
अवली सवली करनारा, तारी...
हे परम कृपालु व्हाला, में पीधा विषना प्याला,
विपने अमृत करनारा, तारी...
कदी छोरुं कछोरुं थाये, तुं तो मावितर कहेवाये,
शीतल छाया देनारा, तारी...
मने जडतो नथी किनारो, मारो क्यांथी आवे आरो,
मोक्ष मारगना देनारा, मारा साचा खेवनहारा, तारी...
छे भक्तनुं जीवन उदासी, तारा शरणेले वितरागी,
भक्तोनां दिलमां हे रमनारा, तारी...

तमे मन मूकीने वरस्यां.....

तमे मन मूकीने वरस्यां, अमे जनम जनमना तरस्यां (2)
तमे मूशल धारे वरस्यां, अमे जनम जनमना तरस्यां (2)
तमे.....1.

हजार हाथे तमे दीधुं, पण झोली अमारी खाली (2)
ज्ञान खजानो तमे लूटाव्यो, तो पण अमे अज्ञानी (2)
तमे अमृतरुपे वरस्यां, अमे जनम जनम तरस्यां (2)
तमे.....2.

स्नेहनी गंगा तमे वहावी, जीवन निर्मल करवा (2)
प्रेमनी ज्योति तमे जलावी, आतम उज्ज्वल करवा (2)
तमे सूरज थईने चमक्या, अमे अंधारामां भटक्या (2)
तमे.....3.

शब्दे शब्दे शाता आपे, अेवी तमारी वाणी,
अे वाणीनी पावनताने, अमे कदी न पिछानी
तमे महेरामण थई उमठया, अमे कांठे आवी अटक्यां
तमे.....4.

दरशन देजो नाथ.....

दरशन देजो नाथ, दरशन देजो नाथ,
भक्तो तारा तने पोकारे, दरशन देजो नाथ, भक्तो.....1.

अंतरनी तमे आशा पूरजो, दुःखडा सौना हरजो
दीनदयालु दादा मारा, रक्षा सौनी करजो,
भुलुं ना तने नाथ, छुटे ना तारो साथ भक्तो.....2.

प्रभु तारा चरणोमां हुं, मांगु तारी सेवा,
शंखेश्वरना पार्श्वप्रभुजी, हो देवाधिदेवा
लईअे तारुं नाम, धरीअे तारुं ध्यान भक्तो.....3.

अमी भरेली आंखडी तारी वरसे अमृतधारा
कृपानिधि करुणा सागर, जगना पालनहारा
देजो मोक्षनुं धाम, हैये पूरजो हाम भक्तो.....4.

अमी भरेली नझर राखो.....

अमी भरेली नझरु राखो, महावीर श्री भगवान रे,
दर्शन आपो दुःखडा कापो, महावीर श्री भगवान रे.

चरण कमलमां शीश नमावुं, वंदन करुं महावीर ने,
दया करीने भक्ति देजो, महावीर श्री भगवान रे.

हुं दुःखीयारो तारे द्वारे, आवी ऊभो महावीर रे,
आशिष देजो उरमां लेजो, महावीर श्री भगवान रे.

तारा भरोसे जीवन नैया, हांकी रह्यो महावीर रे,
बनी सुकानी पार उतारो, महावीर श्री भगवान रे.

भक्तो तमारा करे विनंती, सांभलजो महावीर रे,
मुझ आंगणमां वासतमारो, महावीर श्री भगवान रे.

हे किरतार मने आधार तारो.....

हे किरतार मने आधार तारो,
जो जे ना तूटी जाय..... प्रभु जो जे ना.....
हे प्रभु ! तारा प्रेमनो खजानो,
जो जे ना खूटी जाय... प्रभु जो जे ना..... 1.
तारो आधार मने आ अवनीमां,
आपे प्रकाश ज्योत आ रजनीमां,
श्रद्धाथी बांधी छे गांठो में स्नेहनी...
जो जे ना छूटी जाय... प्रभु जो जे ना..... 2.
शक्ति प्रमाणे भक्ति करुं छुं,
आ जीवन तुज चरणे धरुं छुं,
प्रेमनी प्याली पीवा जाउं त्यां,
जो जे ना फूटी जाय... प्रभु जो जे ना..... 3.
गाउं छुं हे प्रभु गीत तुजप्रीतना
स्नेहथी भरेला सूरो संगीतना,
लाखना हीराने हाथमांथी कोई,
जो जे ना लूटी जाय... प्रभु जो जे ना..... 4.

तुं मने भगवान

तुं मने भगवान, एक वरदान आपी दे,
ज्यां वसे छे तुं मने त्या स्थान आपी दे,

तुं मने भगवान.....

हुं जीवुं छुं अे जगतमां ज्यां नथी जीवन
जींदगीनुं नाम छे बस बोज ने बंधन,
आखरी अवतारनुं मंडाण बांधी दे,

ज्यां वसे छे.....

आ भूमिमां खूब गाजे पापना पडघम,
बेसूरी थई जाय मारी पुण्यनी सरगम,
दिलरुबांना तारनुं भंगाण सांधी दे,

ज्यां वसे छे.....

जोम तनमां ज्यां लागी छे सौ करे शोषण,
जोम जातां कोई अहींया ना करे पोषण,
मतलबी संसारनुं जोडाण कापी दे,

ज्यां वसे छे.....

झगमगता तारलानुं

झगमगता तारलानुं देरासर होजो
अेमां मारा प्रभुजीनी प्रतिमा होजो
अेमां सुंदर सोहामणी आंगी होजो
झगमगता.....

अमे अमारा प्रभुजीने..... फूलोथी वधावीशुं
फूलो नहि मले तो..... अमे कलीओथी सजावीशुं
कलीओथी सुंदर डमरो होशे अेमां मारा.....

अमे अमारा प्रभुजीने..... सोनाथी सजावीशुं
सोनुं न मले तो..... अमे रुपाथी सजावीशुं
रुपाथी सुंदर हीरला होशे अेमां मारा.....

अमे अमारा प्रभुजीने..... मंदिरमां पधरावीशुं
मंदिर ना मले तो..... अमे हृदयमां पधरावीशुं
हृदय सिंहासन पर बेसणा होजो अेमां मारा.....

प्रभु तारुं मंदिर तो.....

प्रभु तारुं मंदिर तो आ जगनो सहारो छे,
सुखिया के दुःखियानो प्रभु तुं तो सहारो छे,

मोह ने मायाना जुओ वादल छवाया छे (2)
तेमां प्रभुनी प्रतिमा, सौने शाता पमाडे छे, प्रभु तारुं...

मारा ने तारामां, सौ जीवन वितावे छे (2)
मारुं कहे ते मरे, प्रभु तारुं कहे ते तरे, प्रभु तारुं...

आ दो रंगी दुनिया, प्रभु जेम तेम बोले छे (2)
प्रभु साचो सहारो छे, जे अंतर खोले छे, प्रभु तारुं...

प्रभु तारुं गीत.....

प्रभु तारुं गीत मारे गावुं छे,
प्रेमनुं अमृत पावुं छे..... प्रभु तारुं.....

आवे जीवनमां तडका ने छाया
मागुं हुं तारी एक ज माया
भक्तिना रसमां न्हावुं छे..... प्रभु तारुं.....

भवसागरमां नैया झुकावी,
त्यां तो भयानक आंधी चडी आवी,
सामे किनारे मार जावुं छे..... प्रभु तारुं.....

तुं वीतरागी हुं अनुरागी,
तारा जीवननी रट मने लागी,
प्रभु तारा जेवुं मारे थावुं छे..... प्रभु तारुं.....

शंखेश्वर का नाथ है हमारा.....

शंखेश्वर का नाथ है हमारा तुम्हारा..... (2)
इस तीरथमें जो भी आये मिले न जन्म दुबारा

शंखेश्वर का.....

कान में कुंडल डोले मस्तक मुगट सुहाये
कैसी सुंदर काया भक्तो के मन भाये
मन की इच्छा पूरी होवे आये द्वार तिहारा

शंखेश्वर का.....

मुक्ति से भक्ति प्यारी कहते ज्ञानी ध्यानी
इसके चरणकल में बीते सारी जिंदगानी
सच्चे दिलसे ध्यान लगा दो होवे वारान्यारा

शंखेश्वर का.....

इस तीरथ के कंकर पथ्थर हम बन जाये
भक्तो हम पे चलकर दर्शन तेरा पाये
अंतिम इच्छा पूरी होवे जीवन हो सुखकारा

शंखेश्वर का.....

शंखेश्वर का पारस लीला अजब दीखाता
इसके चरण में जो भी आये बेडा पार लगाता
राय और रंक को भी तारे जग के तारणहारा

शंखेश्वर का.....

इतनी शक्ति हमें दे ना.....

इतनी शक्ति हमें दे ना दाता,
मनका विश्वास कमजोर हो... ना,
हम चले नेक रस्तेपे,
हमसे भूलकर भी कोई भूल हो ना..... इतनी....

दूर अज्ञानके हो अंधेरे,
तुं हमें ज्ञानकी रोशनी दे,
हर बुराइसे बचकर रहे हम,
जितनी भी दे भली जिंदगी दे,
वैर हो ना किसीका किसीसे,
भावना मनमें बदलेकी हो ना..... इतनी.....

हम न सोचे हमें क्या मिला है,
हम ये सोचे किया क्या है अर्पण,
फूल खुशीयों के बाँटें सदा हम,
सबका जीवन बन जाये मधुवन,
अपनी करुणाका जल तू बहा दे,
कर दे पावन हर इक मन का कोना..... इतनी.....

आंखडी मारी प्रभु

आंखडी मारी प्रभु ! हरखाय छे,
ज्यां तमारा मुखना दर्शन थाय छे, आंखडी मारी...
पग अधीरा दोडता देरासरे,
द्वारे पहोंचुं त्यां अजंपो थाय छे, ज्यां तमारा...
देवनुं विमान जाणे ऊतर्युं,
अेवुं मंदिर आपनुं सोहाय छे, ज्यां तमारा...
चांदनी जेवी प्रतिमा आपनी,
तेज अेनुं चोतरफ रेलाय छे, ज्यां तमारा...
मुखडुं जाणे पूनमनो चंद्रमां,
चित्तमां ठंडक अनेरी थाय छे, ज्यां तमारा...
बस! तमारा रुपने नीरख्या करुं,
लागणी अेवी हृदयमां थाय छे, ज्यां तमारा...

नाम है तेरा तारणहारा.....

नाम है तेरा तारणहारा, कब तेरा दरशन होगा ?
जिनकी प्रतिमा इतनी सुंदर, वो कितना सुंदर होगा.
मनकी मुरादें लेकर स्वामी तेरे चरण में आये है,
हम है बालक तेरे चरण में तेरे ही गुण गाते है,
सुरनर मुनिवर जिनके चरणमें निशदिन शीश झुकाते है,
जो गाते हे प्रभुकी महिमा, वो सब कुछ पा जाते है,
अपने कष्ट मिटाने को, तेरे चरणोमें बंधन होगा...

जिनकी.....

तुमने तारे लाखो प्राणी, ये संतोकी वाणी है,
तेरी छबी पर ये मेरे भगवंत, ये दुनिया दिवानी है,
रुमझुम तेरी पूजा रचाये, जीवनमें मंगल होगा....

जिनकी.....

तीन लोक का स्वामी तु है, तु जगतका दाता है,
जनम जनम से ये मेरे भगवंत, तेरा मेरा नाता है,
भवसे पार उतरनेको, तेरे गीतोका सरगम होगा....

जिनकी.....

अब सौंप दिया.....

अब सोंप दिया इस जीवन को, भगवान तुम्हारे चरणों में,
में हुं शरणगत प्रभु तेरा, रहो ध्यान तुम्हारे चरणों में,
मेरा निश्चय बस एक वही, में तुम चरणों का पूजारी बनुं,
अपर्ण कर दू दूनियाभर का, सब प्यार तुम्हारे चरणों में
अब सोंप दिया.....

मैं जग में रहुं तो अैसे रहुं, ज्युं जल में कमल का फूल रहे,
हे मन वय काया हृदय अर्पण, भगवान तुम्हारे चरणों में,
अब सोंप दिया.....

जहां तक संसार में भ्रमण करुं, तुज चरणों में जीवन को घरुं,
तुम स्वामी मैं सेवक तेरा, घरुं ध्यान तुम्हारे चरणों में,
अब सोंप दिया.....

मैं निर्भय हुं, तुम चरणों में, आनंद मंगल है जीवन में
रिद्वि सिद्धि और संपत्ति, मिल गई है प्रभु तुज चरणों में,
अब सोंप दिया.....

मेरी ईच्छा बस एक प्रभु, एक बार तुजे मिल जाऊं मैं,
इस सेवक ही हर रगरग का, हो तार तुम्हारे हाथों में,
अब सोंप दिया.....

मुक्ति मले के ना मले.....

मुक्ति मले के ना मले, मारे भक्ति तमारी करवी छे,
मेवा मले का ना मले, मारे सेवा तमारी करवी छे,
मुक्ति मले.....

मारो कंठ मधुरो नहोय भले, मारो सूर बेसूरो होय भले,
शब्दो मले के ना मले, मारे स्तवना तमारी करवी छे
मुक्ति मले.....

आवे जीवनमां तडका छाया, सुखना दूर पडे पडछाया,
काया रहे के ना रहे, मारे माया तमारी करवी छे.
मुक्ति मले.....

हुं पंथ तमारो छोडुं नहीं, ने दूर दूर क्यांये दोडुं नहीं,
पुण्य मले के न मले, मारे पूजा तमारी करवी छे.
मुक्ति मले.....

.....प्रभु तमारा पगले-पगले.....

प्रभु तमारा पगले–पगले पा–पा पगली मांडी छे,
हवे तो अक्षर पाडो प्रभुवर (2) मारी कोरी पाटी छे... 1.

बालक हुं छुं मने खबर क्यां, शुं छे साचुं जीवन (2)
पडी जाउं ना क्यांये प्रभु (2) करो रोमे रोमे संजीवन,
सिंचन करजो, मारा कण–कणमां, मारी सूकी माटी छे... 2.

बालक पकडे मों नी आंगली, अेम हुं झालुं छुं तमने (2)
वर्षा राणी भरे सरोवर (2) अेम भरी दो अमने,
अमे अमारी हथेलीओमां, मिलननी रेखा आंकी छे... 3.

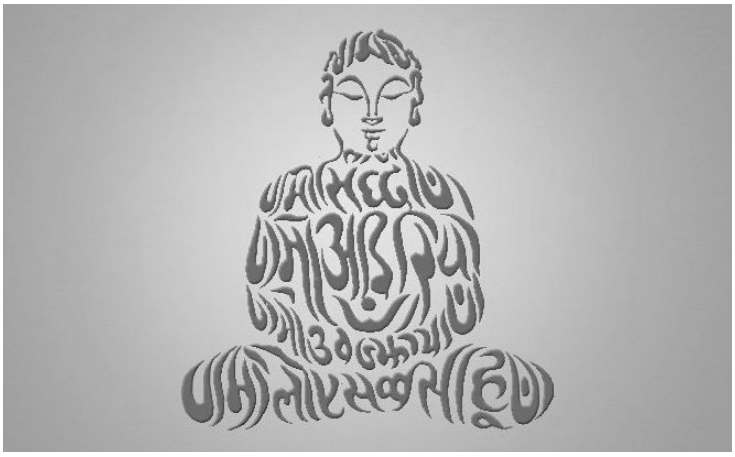

मारुं आयखुं खुटे.....

मारुं आयखुं खूटे जे घडीए त्यारे मारा हृदयमां पधारजो.
छे अरजी तमोने बस अेटली मारा मृत्युने स्वामी सुधारजो.

जीवननो ना कोई भरोसो..... दोडोदोडी ना आ युगमां
अंतरियाले जईने पडुं जो ओचिंता मृत्युना मुखमां
त्यारे मारा स्वजन बनी आवजो... थोडा शब्दो घरमना सुणावजो.

दर्द वध्या छे आ दुनियामां मारे रिबावी रिबावीने
अेवी बीमारी जो मुजने सतावे... छेल्ली पलोमां रडावीने
त्यारे मारी मददमां पधारजो... पीडा सहेवानी शक्ति वधारजो.

जीववुं थोडुं ने झंझाल झाझी अेवी स्थिति छे आ संसारनी
छुटवा दे ना मरती वेलाअे..... चिंता मने जो परिवारनी
त्यारे दीवो तमे प्रगटावजो... मारा मोह तिमिरने हटावजो.

ऐसी दशा हो भगवान.....

ऐसी दशा हो भगवान जब प्राण तनसे निकले,
गिरिराज की हो छाया... मन में न होवे माया,
तपसे हो शुद्ध काया... जब प्राण तनसे निकले
ऐसी दशा.....

उर में न मान होवे... दिल एक तान होवे
तुम चरण ध्यान होवे... जब प्राण तनसे निकले
ऐसी दशा.....

संसार दुःख हरना... जैन धर्म का हो शरणा
वो कर्म–भर्म खरनां... जब प्राण तनसे निकले
ऐसी दशा.....

अनशन को सिद्धवट हो... प्रभु! आदिदेव घट हो
गुरुराज भी निकट हो... जब प्राण तनसे निकले
ऐसी दशा.....

यह दान मुजको दीजे... ईतनी दया तो कीजे,
अरजी तिलक की लीजे जब प्राण तनसे निकले
ऐसी दशा.....

भक्ति करतां छुटे.....

भक्ति करतां छुटे मारा प्राण, प्रभु अेवुं मागुं छुं
रहे हृदयकमलमां तारुं ध्यान, प्रभु अेवुं मागुं छुं
रहे जनमो जन्म तारो साथ, प्रभु अेवुं मागुं छुं

तारुं मुखडुं मनोहर जोया करुं, रात दिन गुणो तारा गाया करुं,
अंत समय रहे तारुं ध्यान, प्रभु अेवुं मागुं छुं..... भक्तिकरतां

मारी आशा निराशा करशो नहीं, मारा अवगुण सामुं जोशो नहीं,
श्वासे श्वासे रहे तारुं ध्यान, प्रभु अेवुं मागुं छुं..... भक्तिकरतां

मारा पाप ने ताप समावी लेजो, आ सेवकने चरणोमां राखी लेजो
देजो आवीने दर्शन दान, प्रभु अेवुं मांगु छुं..... भक्तिकरतां

तारी आशाए प्रभु हुं जीवी रह्यो,तमने मलवाने प्रभु हुं तलसी रह्यो,
मने राखो तमारी पास, प्रभु अेवुं मांगु छुं..... भक्तिकरतां

मारा भवोभवनां पाप दूर करो, मारी अरजी प्रभुजी हैये धरो,
तमे रहेजो भवोभव साथ, प्रभु अेवुं मांगु छुं..... भक्तिकरतां

एक ज अंतरनी अभिलाष प्रभु एवुं मांगु छु, भक्तिकरतां.....

झीणो झीणो उडे रे गुलाल.....

झीणो झीणो उडे रे गुलाल, प्रभुजी मारा मंदिरमां
लाल लाल ऊडे रे गुलाल, प्रभुजी तने घणी रे खम्मा..... 1.
पार्श्व जिनेश्वर माराजी मारा (2)
पर दुःख भंजन हार, प्रभुजी तने घणी रे खम्मा... झीणो.. 2.
मोहनी मूरत लागे प्यारी (2)
त्रण लोकना नाथ, प्रभुजी तने घणी रे खम्मा... झीणो.. 3.
शरणे तारा आव्या प्रभुजी (2)
तारो ने तारणहार, प्रभुजी तने घणी रे खम्मा... झीणो.. 4.
समवसरणमां आप बिराजो (2)
मुक्तिना दातार, प्रभुजी तने घणी रे खम्मा... झीणो.. 5.
मारा प्रभुजीनुं मुखडुं मलके (2)
हैयुं सहुनुं हरखे, प्रभुजी तने घणी रे खम्मा... झीणो.. 6.

दोष थी हर्यो भर्यो.....

दोषथी हर्यो भर्यो छुं छतां, दादा तुजने मलवानी घणी आश छे,
हुं भले निरखी शकुंना तने दादा, तुं परतुं मारी आसपास छे. 1.
भले तुं कोयलना गाने, भले तुं ग्रंथना पाने,
मने तुं आवीने मलजे, ओ दादा कोईपण बहाने,
झेर बधां में पी लीधा आ विश्वना.....
दादा तुजने पीवानी हजी प्यास छे..... 2.
वस्यो तुं धरती गगनमां, वस्यो तुं सुंदर वन–वनमां,
वस्यो तुं मां अने संतमां, छतां शांति नथी मनमां,
द्दष्टिगोचर था हवे तुं आ विश्वमां.....
तुज विना सहुं अहीं निराश छे. 3.
हुं ने मारुंने मारामां, अे ज वातो मने गमे,
बीजानां गुण तणी सरगम, हृदयमां सुणवी गमे,
मोह तणां समुद्रमां डुबी गयो,
दादा तारी पासे आववानी घणी आश छे. 4.

मुश्केली ज्यारे पडे

मुश्केली ज्यारे पडे, त्यारे तने याद करुं,
सुखी थतां विसरु तने, ने दुःखी थतां याद करुं..... 1.

मूडी थाये बे पैसानी, थइ जाउं त्यारे हुं अभिमानी,
ज्यारे खावाना सां..... सां..... पडे, त्यारे तने.... 2.

जोबन ज्यारे अंगे छलके, पाप करुं त्यां मुखडु मलके,
ज्यारे कायामां कीडा पडे, त्यारे तने..... 3.

भणतर लउं ज्यां आ दुनियानुं, हस्ती तारी हुं ना मानुं,
ज्यारे हथियारो हेठा पडे, त्यारे तने..... 4.

साथ करे ज्यां बे संगाथी, गज गज फूले मारी छाती,
ज्यारे अेकलडा मरवुं पडे, त्यारे तने..... 5.

शंखेश्वरनो राजीयो रे.....

शंखेश्वरनो राजीयो रे प्रभु !
पारसनाथ तारुं नाम..... के होवे होवे
प्रभु ! पारसनाथ तारुं नाम
हे हुं तो तारां चरणोनी सेवा मागुं आज (2)
वामाना नंदन तने..... कोटि कोटि वंदन (2)
कोटि कोटि वंदन..... तने कोटि कोटि वंदन
हो..... हो..... केम विसारुं तने वामाना नंदन तने,
रहेजो आ संघनी साथ..... के होवे होवे.....
एकसो ने आठ प्रभु पार्श्व तारां नाम छे,
पार्श्व तारा नामने करे मारा काम रे,
हो..... हो..... केम विसारुं तने वामाना नंदन तने
राखजो मारी लाज..... के होवे होवे.....

छोडीने क्यां जईअे.....

तुं तो छे अंतर्यामी प्रभुजी अमे तने शुं कहीअे ?
तुं ज कहे के स्वामी ! तुजने छोडीने क्यां जईअे ?.....
छोडीने क्यां जईअे ? ओ प्रभु ! तने छोडीने क्यां जईअे ?
ठामो ठाम भटकीअे किन्तु क्यांय अमे ना करीअे..... दादा तने..

तारा जेवो कोई न दीठो, मनडाने तुं लागे मीठो (2)
करुणासागर ! हे तीर्थंकर ! शरणुं तारुं लईअे..... दादा तने...

तुं ज अमारो मुक्तिदाता, तारा शरणे मलती माता (2)
निर्मल थईने नम्र बनीने, कीर्तन तारुं करीअे..... दादा तने...

हे परमेश्वर ! तुं वितरागी, तारा दर्शनना अमे रागी,
शक्ति नथी पण स्वामी ! अमे तो भक्ति तारी करीअे.. दादा तने..

चौक पूरावो, दीवडा प्रगटावो...

चौक पूरावो, दीवडा प्रगटावो, आज मेरे प्रभुजी पधारे है (2)

आंगी रचावो, मुगट चढावो, आज मेरे प्रभुजी पधारे है.....

येरी सखी मंगल गाओ रे, धरती अंबर सजावो रे,

मेरे प्रभुजी की निकली सवारी ..... चौक पूरावो..... 1.

रंगो से रंग मीले, नये नये ढंग खीले,

खुशियोने आज यहां डाला है डेरा..... चौक पूरावो..... 2.

पीयु पीयु पपीहा बोले, कुहु कुहु कोयल बोले

रचलेणे आज मेरे प्रभु की पूजाअे.....

चौक पूरावो, दीवडा प्रगटावो, आज प्रभु मेरे घर आये है

अेरी अेरी सखी..... ओरी ओरी सखी.....

व्हाला आदिनाथ.....

व्हाला आदिनाथ, में तो पकड्यो तारो हाथ,
मने देजो सदा साथ हो... हो... व्हाला आदिनाथ हो... हो...
आव्यो तुम पास, लई मुक्तिनी आश (2)
मने करशो ना निराश हो... हो... व्हाला आदिनाथ हो... हो...
तारा दर्शनथी मारा, नयनो ठरे छे (2)
रोम रोम मारा, पुलकित बने छे (2)
भवोभवनो मारो उतरे छे थाक, हु तो पामु हळवाश... हो... हो...
हो... हो... व्हाला आदिनाथ हो... हो...
तारी वाणीथी मारुं मनडुं ठरे छे (2)
कर्मवार कला मारी क्षण क्षण खरे छे (2)
ठरी जाय छे मारा कषायोनी आग, छुटे राग–द्वेषनी गांठ (2)
हो... हो... व्हाला आदिनाथ हो... हो...
तारी आज्ञाथी मारुं हैयुं ठरे छे (2)
तुज पंथे आगल वधवा सत्व मले छे (2)
टली जाय छे मारो मोह अंधकार, खीले ज्ञान अजवाश,
हो... हो... व्हाला आदिनाथ हो... हो...
तारुं शासन पामीने, आतम ठरे छे (2)
मोक्ष मारगमां अे तो स्थिर बने छे (2)
मल्यो तारो हाथ, मारा केवा धन्य भाग्य (2)
हो... हो... व्हाला आदिनाथ हो... हो...

तमे आवजो रे.....

तमे आवजो रे, शंखेश्वर मुकामे
मारा पार्श्वप्रभुना नामे, लखजो कागलीया,
अेमां छांटजो रे, तमे केसरना छांटणीया,
अेमां कंकुंना छांटणीया, लखजो कागलीया... लखजो..1.

पार्श्व प्रभुनी आंगी रचजो, लईने ताजा फूल,
आंगी अेवी सुंदर रचजो, थाय नहि रे भूल,
आंगी शोभती रे, तमे मंदिरीया शणगारो,
अेमां दीवडाओ प्रगटारो.. लखजो कागलीया.. तमे आवजो ..2.

सोना रुपाना फूलडे आजे पार्श्वप्रभुने वधावो,
साचा देवनी भक्ति करवा, शंखेश्वरमां आवो,
थै थै नाचजो रे, तमे पार्श्व प्रभुना द्वारे,
अेनी भक्तिना आधारे.. लखजो कागलीया.. तमे आवजो ..3.

अवसर आ सुंदर आव्यो, हेतथी उज्वजो,
दुर्लभ छे आ मानवभव आ वातना विसरजो,
भक्तिभावथी रे, तमे मानवता महेंकावो,
प्रभु पार्श्वना चरणोमां आवो.. लखजो कागलीया.. तमे आवजो..4.

हो जो.... जय जय कार...

होजो जय जयकार, प्रभुजीनो जय जयकार,
जिनशासनमां जनम लईने सफल कीधो अवतार रे...
जय जय (8) जयकार हो... जो... 1.
आकाशे जेम सूर्य चंद्र तेम, वीर प्रभु छे अमारा
तुज दरिसन करवाने काजे, प्यासा नयन अमारा
तुं छे तारणहार..... प्रभुजीनो... 2.
करुणा सामे कर्मराजानो, जंग हवे खेलाशे,
पावनकारी अे करुणाथी, आतम सौ रंगाशे,
भवसागरथी उगार..... प्रभुजीनो... 3.
भाई भगिनी आंसु वहावे, लेश दया ना आवे,
करुणा आ पावनपंथे, तुज विचरवा लागे,
छोडी–दीधो संसार..... प्रभुजीनो... 4.
प्रभुना पंथे संयम लईने, शासन ज्योत जलावी
पितृ भातृना नाम दीपाव्या, मानी कुख उजाली
लाग्यो जगत असार..... प्रभुजीनो... 5.

लगनी लागी छे

लगनी लागी छे, अगनी जागी छे, तारा मिलननी प्रभु !
पलेपल झंख्या करुं, तने के लगनी लागी छे, 1.

घेलु लाग्युं मुजने, हुं क्यारे तुजने भेटुं ?
तारा पावन खोले, मीठी निंदरमां लेटुं ?
शमणामां रोज हुं, रोज हुं निरख्या करुं तने, लगनी... 2.

हलवा हलवा हाले, आ हैयाना घबकारा,
घडीये घडीये दिलमां, वागे तारा भणकारा,
अंतरना गोखमां, गोखमां कलप्या करुं तने, लगनी... 3.

जाय भले जन्मारो, पण धीरज हुं ना हारुं,
मरवानी वेलाअे, पण तारुं नाम पुकारुं,
जीवुं हुं, ज्यां सुधी, त्यां सुधी, समयी करुं तने, लगनी... 4.

आशरा इस जहां का.....

आशरा इस जहां का मीले ना मीले,
मुजको तेरा सहारा सदा चाहिये..... आशरा
चांद तारे गगन में खीले ना खीले,
मुझको तेरा उजाला सदा चाहिये... 1.

यहां खुशियां है कम, और ज्यादा है गम,
जहां देखो वहां है, भरम ही भरम,
मेरी महेफील में शमां जले ना जले,
मुझको तेरा उजाला सदा चाहिये... 2.

मेरी धीमी है चाल, और पथ है विशाल,
हर कदम पर मुसीबत हे... अब तो संभाल,
पैर मेरे थके है..... चले ना चले...
मुझको तेरा उजाला सदा चाहिये... 3.

कभी वैराग है, कभी अनुराग है,
जहां बदलते है माली वो ही बाग है,
मेरी चाहत की दुनिया बसे ना बसे,
मुझको तेरा उजाला सदा चाहिये... 4.

हे नाथ ! जोडी हाथपाये..... (प्रार्थना)

हे नाथ! जोडी हाथ पाये प्रेमथी सौ लागीए,
शरणुं मले साचुं तमारुं, ए हृदयथी मागीए.
जे जीव आव्यो आप शरणे, चरणमां अपनावजो,
परमात्मा, अे आत्माने परम शांति आपजो.

वली कर्मना योगे करी, जे कुलमां ए अवतरे ,
त्यां पूर्ण प्रेमे ओ प्रमुजी! आपनी भक्ति करे.
लक्ष चोर्याशी बंधनोने... लक्षमां लई कापजो,
परमात्मा, अे आत्माने परम शांति आपजो.

सुसंपत्ति सुविचारो ने सत्कर्मनो दई वारसो,
जनमो जन्म सत्संगथी किरतार पार उतारजो.
आ लोकने परलोकमां तुज प्रेम रग रग व्यापजो,
परमात्मा, ए आत्माने शांति साची आपजो

मले मोक्ष के सुख स्वर्गनुं आशा ऊरे अेवी नथी,
मल्यो देह मानवीनो, भजन करवा भावथी
साचुं बतावी रुप श्रीवीर हृदये स्थापजो,
परमात्मा अे आत्माने शांति साची आपजो.

.....आरती.....

जय जय आरती आदि जिणंदा.....
नाभिराया मरुदेवी को नंदा
पहेली आरती पूजा कीजे
नरभव पामीने ल्हावो लीजे... जय जय...
दूसरी आरती, दीन दयाला,
धूलेवा मंडपमां जग अजवला... जय जय...
तीसरी आरती त्रिभुवन देवा,
सुरनर इन्द्र करे तोरी सेवा... जय जय...
चोथी आरती चउगति चूरे,
मनवांछित फल शिवसुख पूरे... जय जय...
पंचमी आरती पुन्य उपाया,
मूलचंदे ऋषभ गुण गाया... जय जय...

.....मंगल दीवो.....

दीवो रे दीवो प्रभु मंगलिक दीवो,
आरती उतारण बहु चिरंजीवो...
सोहामणुं घेर पर्व दिवाली,
अंबर खेले अमारा बाली... दीवो रे...
दीपाल भणे अेणे कुल अजवाली,
भावे भगते विघन निवारी... दीवो रे...
दीपाल भणे अेणे अे कलिकाले
आरती उतारी राजा कुमारपाले... दीवो रे...
अम घेर मंगलिक, तुम घेर मंगलिक,
मंगलिक चतुर्विध संघनो होजो... दीवो रे...

.....वधाई.....

दीनानाथनी वधाई बाजे छे,
मारा नाथनी वधाई बाजे छे,
शरणाई सूर नोबत बाजे,
ओर धनन धन गाजे छे... मारा नाथनी...
इन्द्र इन्द्रानी मील मंगल गावे,
मोतियन चौक पुरावे छे... मारा नाथनी...
सेवक प्रभुजी शुं अरज करत है,
चरणों की सेवा प्यारी लागे छे... मारा नाथनी...

रजा आपोने

रजा आपोने हवे दादा, अमारी वात थई पूरी (2)
अधुरी वात छे तोटो, आ मुलाकात थई पूरी अमारी.....
कर्या कामण तमे अेवा, अमे तारा बनी बेठा
तमारी प्रीतमां घायल, अमे घेला बनी बेठा
तमे आधार थई बेठां, अमे लाचार थई बेठा अमारी.....
स्मरण तारुं हंमेशा दे, मरण टाणे समाधि दे,
रहे निर्लेपता सुखमां, अने दुःखमां दिलासो दे,
फक्त आटलुं जो आपो, अमारी मागणी पूरी अमारी.....
करीने साधना उत्तम, तमे मोक्षे जई बेठा,
सदा भटकीने ललडीने, अमे संसार लई बेठा,
दीवाओ साव बुझाया, तेल खुट्युं रात थई पूरी, अमारी.....
तमे सरीता तणी लहेरो, तमे सागर तणो गहेरो,
तमारा स्मितना पुष्पो अने जाखर बीनो चहेरो,
तमारा मुखने जोयुं (2) हवे फरियाद थई पूरी, अमारी.....
उदय विनवे छे करजोडी, फरी आवीश हुं दोडी,
झुकावी आंखने अमथी, रजा आपो हवे थोडी,
जवानुं मन नथी थातुं, अमारी आज मजबूरी, अमारी.....

पूजा/भावना पछीनो संकल्प

हे करुणासागर प्रभु! हे देवाधिदेव ! आजनी तारी पूजा/भक्ति भावना ना अचिंत्य प्रभावथी मने जे कांई शुद्धि मली होय, तेनाथी मने मोक्ष ज मलो अने जे कांई पुण्य उत्पन्न थयुं होय, तेनाथी जगतनां सर्व जीवोने सुख, शान्ति अने सद्‌बुद्धि मलो.

प्रार्थना

शक्ति मळे तो सहुने मळजो, जिनशासन सेवा सारुं,
भक्ति मळे तो सहुने मळजो, जिनशासन लागे प्यारुं,
मुक्ति मळे तो सहुने मळजो, राग–द्वेष अज्ञान थकी,
जिन शासन सहुने मळो भवोभव, अेवी श्रद्धा थाय नक्की.

.....हे देव मारा आजथी.....

हे देव मारा आजथी तारो बनीने जाऊं छुं,
दिलडाना देव मारा, दिल दईने जाऊं छुं,
मुज मनडा केरी भक्तिनी, महेंक मूकतो जाऊं छुं,
अंतरना आपेल आशिष हुं, अंतरथी लई जाऊं छुं,
फरी फरी मलवानो तने कोल दईने जाउं छुं,
निभाववानो भार तारे माथे मूकतो जाऊं छुं,
श्वासे श्वासे नाम जपीश हुं, सोगंध लइने जाऊं छुं,
जुग जुग जीवो जाजी खम्मा, चरण चुमतो जाऊं छुं.